पाठ 6: भविष्यवाणी संबंधी लेखन

क. **प्राप्त प्रकाशन को लिखने का निर्देश**

1. निर्गमन 17:14 परमेश्वर ने प्राप्त प्रकाशन को लिखने का पहला स्पष्ट निर्देश कब दिया?
2. यिर्मयाह 36:2 यहोवा ने भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह को क्या निर्देश दिया?
3. प्रकाशितवाक्य 1:1-3 "धन्य है वह जो इस को पढ़ता हैधन्य है" इन शब्दों से क्या संकेत मिलता है?
4. तुम्हारे विचार से यहोवा ने भविष्यद्वक्ताओं को प्राप्त प्रकाशनों को केवल मौखिक रूप से सुनाने के बजाय उन्हें लिखने का निर्देश क्यों दिया? (रोमियों 15:4)

ख. **लेखन की विभिन्न शैलियाँ**

1. पवित्रशास्त्र लगभग 1,500 वर्षों की अवधि में तीन भाषाओं में लगभग 40 लेखकों द्वारा लिखा गया। उनमें से कुछ लोग कौन-कौन से व्यवसाय करते थे? उन सभी में क्या समानता थी?
2. पवित्रशास्त्र में किस प्रकार की लेखन शैलियाँ पाई जाती हैं?
    a. कहानियाँ। एक उदाहरण दीजिए। (बाइबल का 43%)
    b. गीत। एक उदाहरण दीजिए।
    c. प्रतीकात्मक भविष्यवाणियाँ। एक उदाहरण दीजिए।
    d. दृष्टांत। एक उदाहरण दीजिए।
    e. कविताएँ। एक उदाहरण दीजिए।
    f. नीतिवचन। एक उदाहरण दीजिए।
    g. ऐतिहासिक अभिलेख। एक उदाहरण दीजिए।
3. पवित्रशास्त्र में लेखन के विभिन्न प्रकार और शैलियाँ ईश्वरीय प्रकाशन के बारे में क्या प्रकट करती हैं?

ग. **लेखन सहायक**

1. यिर्मयाह 36:1-8, 17-18 यिर्मयाह की पुस्तक लिखने में पवित्र आत्मा से किसे प्रेरणा मिली थी–भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह को, लेखक बारूक को, या दोनों को?
2. रोमियों 16:22 प्रेरित पौलुस को रोम के मसीही लोगों के लिए अपना प्रेरित पत्र लिखने में किसने सहायता दी? हम कैसे सुनिश्चित हो सकते हैं कि लेखन सहायक ने प्रेरित पौलुस के शब्दों को सही-सही लिखा?
3. कुलुस्सियों 4:18 में प्रेरित पौलुस की टिप्पणी से क्या संकेत मिलता है?
4. 1 पतरस 5:12 में पतरस को बिखरे हुए लोगों के बीच रहने वाले विश्वासियों के लिए अपना प्रेरित पत्र लिखने में किसने सहायता दी? हम सिलवानुस के बारे में क्या जानते हैं? (2 कुरिन्थियों 1:19; 1 थिस्सलुनीकियों 1:1 देखें)

घ. **दूसरों से योगदान प्राप्त करना**

1. लूका 1:1-4 यीशु के जीवन और शिक्षाओं के प्रत्यक्षदर्शियों के विवरण एकत्र करते समय वैद्य लूका का मार्गदर्शन किसने किया? (2 तीमुथियुस 3:16-17 देखें)
2. राजा सुलैमान ने नीतिवचनों का अपना संग्रह तैयार करते समय, जिनमें से सभी उसने स्वयं नहीं लिखे थे, किसके मार्गदर्शन में कार्य किया? सभोपदेशक 12:9-11; नीतिवचन 1:1; 30:1; 31:1